ORIGINAL RESEARCH PAPER

Management

उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों के कार्यमूल्यों का उनकी शिक्षण प्रभावशीलता पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन

KEY WORDS: कार्यमूल्य, शिक्षण प्रभावशीलता, परामर्शदाता, प्रेरणादाता

डॉ. ज्योति सुहाने भूतपूर्ण सहायक प्राध्यापक हितकारिणी प्रशिक्षण महिला महाविद्यालय (जबलपुर,म.प्र.)

ABSTRACT

प्रस्तुत शोधपत्र में उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों के कार्यमूल्यों का उनकी शिक्षण प्रभावशीलता पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है। बदलते परिवेश में अध्यापक की भूमिका समय प्रवाह के साथ–साथ परिवर्तनशील हो रही है। अब अध्यापक– एक सहयोगी, परामर्शदाता एवं प्रेरणादाता के रूप में जाने जाते है। अध्यापक वह माध्यम है जिसके सानिध्य में छात्र अपनी मूल प्रवृत्तियों को परिष्कृत करके एक संयमी, विवेकी तथा सफल नागरिक बनने का प्रयास करता है। इसीलिये अध्यापकों के कार्यमूल्य व शिक्षण प्रभावशीलता में सकारात्मक सहसंबंध होना अति आवश्यक है।

शैक्षिक प्रक्रिया में अध्यापक की भूमिका एक केन्द्रक के रूप में होती है। अध्यापक का प्रभाव, उत्साह, स्फूर्ति एवं चरित्र उसके शिक्षण को प्रभावी बनाते हैं जो विद्यार्थी के विचारों, मूल्यों, अभिवृत्तियों व संस्कारों को परिष्कृत कर समय सापेक्ष बनाने का दायित्व निर्वहन करता है। कक्षा–कक्ष अनुक्रिया के दौरान ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न होती है जिनसे छात्रों का गुणात्मक विकास संभव होता है।यही कारण है कि **अध्यापकों की तुलना प्रकाश स्तंभ से की गयी है जिसके प्रकाश में बालक अपना सर्वांगीण विकास करता है।** इसलिये अध्यापकों में स्वयं के **कार्य मूल्यों** के प्रति सजगता होना अति आवश्यक है क्योंकि इसके कारण उनमें ऊर्जा व स्फूर्ति का संचार होगा जिससे उनकी शिक्षण प्रभावशीलता में वृद्धि होगी और विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में भी वृद्धि परिलक्षित होगी।

उच्च कार्य मूल्यों से ओत–प्रोत श्रेष्ठ एवं सृजनशील शिक्षक ही राष्ट्र निर्माण में अहम् भूमिका निभा सकता है। अतः यह वर्तमान समाज की आवश्यकता है कि शिक्षकीय ज्ञान और सम्प्रेषण कौशल के साथ–साथ अध्यापकों कों को आंतरिक रूप से सशक्त बनाने की ताकि वे अपना चारित्रिक विकास कर सके। साथ ही उनमें सृजनात्मक और श्रेष्ठ चिंतन की क्षमता का विकास हो सके।

जोलीदी एफ. एवं यशोधरा (2008) में भारत और ईरान के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के कार्य मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया। निष्कर्ष से ज्ञात होता है कि ईरान के शिक्षकों के कार्य मूल्य भारतीय शिक्षकों से बेहतर पाये गये।पढ़ाये गये विषयों व आयु समूह का उनके कार्य मूल्य पर कोई सार्थक प्रभाव नही पड़ा । **कुमार** अजय (2012) ने हरियाणा की दयानन्द विश्वविद्यालय के शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की चिन्तनशैली, कार्यमूल्य, एवं शिक्षण प्रभावशीलता का उनकी व्यवसायिक प्रतिबद्धता से संबंध का अध्ययन किया एवं कार्यमूल्य, एवं शिक्षण प्रभावशीलता का उनकी व्यवसायिक प्रतिबद्धता के मध्य धनात्मक सहसंबंध पाया गया। **लूसिला डी. विपिनोसा** (2015)कैपीज राज्य विश्वविद्यालय में विज्ञान के शिक्षकों की उत्पादकता, कार्यमूल्यों और शिक्षणप्रभावशीलता का अध्ययन किया तथा उक्त तीनों चरों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं पाया। **ढिल्लों और नवदीप** (2010) ने शिक्षकों के मूल्यो के प्रतिमानों एवं शिक्षकों की प्रभावशीलता के संबंधों का अध्ययन किया जिसके निष्कर्ष में पुरूष–महिला, शासकीय–अशासकीय शिक्षकों के मूल्यों व शिक्षण प्रभावशीलता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं आया।

चर :–

- स्वतंत्र चर :– अध्यापकों के कार्य मूल्य
- आश्रित चर :– अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता
- नियंत्रित चरः– उच्च माध्यमिक स्तर (हाई स्कूल) के अध्यापक

एवं इन्हीं के पढाये हुये विद्यार्थी

शोध कार्य के उददेश्य :–

1. कार्यमूल्यों का कला एवं विज्ञान विषय एवं इनके सम्मिलित समूह के अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन।
2. कार्यमूल्यों एवं शाला प्रबंधन की प्रकृति का अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन।
3. कार्यमूल्यों एवं शाला प्रबंधन की प्रकृति एवं पढाये गये विषयों का अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन।

परिकल्पना :–

1. कार्यमूल्यों का कला एवं विज्ञान विषय एवं इनके सम्मिलित समूह के अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पडता।
2. कार्यमूल्यों एवं शाला प्रबंधन की प्रकृति का अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पडता।
3. कार्यमूल्यों एवं शाला प्रबंधन की प्रकृति एवं पढाये गये विषयों का अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पडता।

उपकरण :–

1. कार्य मूल्यों ज्ञात करने के लिये श्रीमती अविधा दुबे द्वारा निर्मित **कार्य मूल्य परीक्षण का** इस्तेमाल किया गया है।
2. शिक्षण प्रभावशीलता ज्ञात करने के लिये शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित प्रश्नावली का निर्माण किया गया।

न्यादर्श :–

जबलपुर जिले के अंतर्गत आने वाले शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों की उच्च माध्यमिक विद्यालयों (हाई स्कूल) के 400 अध्यापको (महिला एवं पुरूष) एवं एवं इन्हीं के पढाये हुये 1000 विद्यार्थियों का न्यादर्श के लिए चयन किया गया।

सीमांकन :–

जबलपुर जिले के अंतर्गत आने वाले शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों की उच्च माध्यमिक विद्यालयों (हाई स्कूल) के विज्ञान एवं कला विषय के अध्यापको (महिला एवं पुरूष) एवं उनके द्वारा पढाये गये छात्र एवं छात्राओं को न्यादर्श के लिए सम्मिलित किया गया।

प्रयुक्त सांख्यिकी :–

साख्यिकीय विधियाँ जैसे कि–मध्यमान, प्रमाप विचलन, 'टी' मान एवं प्रसरण विश्लेषण का प्रयोग किया गया।

प्रदत्त विश्लेशण :–

सारणी क्रमांक – 1

कार्यमूल्यों का कला एवं विज्ञान विषय के अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर पडने वाले प्रभाव संबंधी तुलनात्मक परिणाम

कार्यमूल्य	विषय	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन
उच्च	कला	144	19.68	5.73
	विज्ञान	190	20.93	5.19
निम्न	कला	192	20.21	5.21
	विज्ञान	213	20.63	5.56

प्रसरण विश्लेशण (एनोवा) तालिका

प्रसरण के स्त्रोत	स्वतंत्रता के अंश	वर्गों का योग	वर्गों का मध्यमान	एफ अनुपात	पी मूल्य
समूह के मध्य	3	145.34	48.45	1.65	> 0.05

स्वतंत्रता के अंश– 3, 735 0.05 स्तर पर सार्थकता का निर्धारित मान– 2.61
0.01 स्तर पर सार्थकता का निर्धारित मान– 3.80

उपरोक्त सारणी मे प्रदर्शित परिणामों से ज्ञात होता है कि उच्च एवं निम्न कार्यमूल्यों का कला एवं विज्ञान विषयों के अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पडा है। प्राप्त **'एफ'अनुपात** का मान **–1.65** हैं जो कि 0.05 के सारणी मान से कम है।

सारणी क्रमांक –2

कार्यमूल्य एवं शाला प्रबंधन की प्रकृति का अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर पडने वाले प्रभाव संबंधी तुलनात्मक परिणाम

कार्यमूल्य	शाला प्रबंधन की प्रकृति	अध्यापकों की संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन
उच्च	शासकीय	200	19.95	5.48
	अशासकीय	134	21.02	5.39
निम्न	शासकीय	199	19.85	5.39
	अशासकीय	206	21.00	5.35

प्रसरण विश्लेशण (एनोवा) तालिका					
प्रसरण के स्त्रोत	स्वतंत्रता के अंश	वर्गों का योग	वर्गों का मध्यमान	एफ अनुपात	पी मूल्य
समूह के मध्य	3	226.86	75.62	2.59	झ 0.05
समूह के अंर्तगत	735	21469.91	29.21		

स्वतंत्रता के अंश– 3, 735 0.05 स्तर पर सार्थकता का निर्धारित मान– 2.61
0.01 स्तर पर सार्थकता का निर्धारित मान– 3.80

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से ज्ञात होता है कि उच्च एवं निम्न कार्यमूल्यों एवं शाला प्रबंधन की प्रकृति का अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पडता है। प्राप्त **'एफ' अनुपात** का मान–**2.59** है जो कि 0.05 के सारणी मान से कम है।

सारणी क्रमांक– 3
कार्यमूल्य, शाला प्रबंधन की प्रकृति एवं कला एवं विज्ञान विशयों के अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर पडने वाले प्रभाव संबंधी तुलनात्मक परिणाम

कार्यमूल्य	शाला प्रबंधन की प्रकृति	विषय	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन
उच्च	शासकीय	क्ला	87	19.47	5.78
		विज्ञान	113	20.32	5.24
	अशासकीय	क्ला	57	20.00	5.69
		विज्ञान	77	21.82	5.03
निम्न	शासकीय	क्ला	96	19.91	5.36
		विज्ञान	103	19.80	5.44
	अशासकीय	क्ला	96	20.52	5.06
		विज्ञान	110	21.42	5.59

प्रसरण विश्लेशण (एनोवा) तालिका

प्रसरण के स्त्रोत	स्वतंत्रता के अंश	वर्गों का योग	वर्गों का मध्यमान	एफ अनुपात	पी मूल्य
समूहों के मध्य	7	416.03	59.43	2.04	< 0.05
सेमूहों के अंतर्गत	731	21257.26	29.08		

स्वतंत्रता के अंश– 7, 731 0.05 स्तर पर सार्थकता का निर्धारित मान– 2.02
0.01 स्तर पर सार्थकता का निर्धारित मान– 2.66

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पश्ट होता है कि उच्च एवं निम्न कार्यमूल्य, शाला प्रबंधन की प्रकृति एवं कला एवं विज्ञान के अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर सार्थक प्रभाव पडता है। प्राप्त **'एफ' अनुपात** का मान–**2.04** है जो कि 0.05 के सारणी मान (2.02) से अधिक हैं।

उपरोक्त परिणामों से ज्ञात होता है कि उच्च कार्यमूल्य के अशासकीय विद्यालयों के विज्ञान के अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता सबसे अच्छी है तथा उच्च कार्यमूल्यों के कला विषय के शासकीय विद्यालयों के अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता सबसे कम अच्छी है।

परिणामों की व्याख्या :–
अध्यापकों के कार्यमूल्य और शिक्षण प्रभावशीलता संबंधी परिणामों से यह ज्ञात होता है कि प्रमुखतः कार्यमूल्यों का शिक्षण प्रभावशीलता पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पडा है। अशासकीय विद्यालयों के विज्ञान विषय के अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता शासकीय विद्यालयों की तुलना में कॉफी अच्छी पायी गयी।

प्रस्तुत परिणामों के इस प्रकार आने का संभावित कारण यह भी हो सकता है कि अध्यापको के कार्य एवं दायित्व मूलतः अपने विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में निखार लाना होता है। यही कारण है कि अध्यापक अपने कार्यमूल्यों को अपने शिक्षण कार्यों में हावी हाने नहीं देते। **जोलीदी एफ. एवं यशोधरा (2008)** निष्कर्ष से ज्ञात होता है कि पढ़ाये गये विषयों व आयु समूह का उनके कार्य मूल्य पर कोई सार्थक प्रभाव नही पड़ा। जबकि **लूसिला डी. विपिनोसा** (2015) के अध्ययन में विज्ञान के शिक्षकों को अपने कार्यमूल्यों की परवाह किये बिना अपने कर्त्तव्य पालन को महत्व (प्रभावशाली शिक्षण) दिया। इसी प्रकार शाला प्रबंधन की प्रकृति के कारण भी कार्यमूल्यों व शिक्षण प्रभावशीलता प्रभावित नहीं होती है। **ढिल्लों और नवदीप** (2010) के अध्ययन निष्कर्ष में पुरूष–महिला, शासकीय–अशासकीय शिक्षकों के मूल्यों व शिक्षण प्रभावशीलता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं आया।

इस प्रकार पूर्व शोधकार्यों के निष्कर्षों से परिलक्षित होता है कि कार्यमूल्यों के कारण शिक्षण प्रभावशीलता में कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पडता।

निश्कर्श :–
1. कार्यमूल्यों का कला एवं विज्ञान विषय एवं इनके सम्मिलित समूह के अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पडता।
2. कार्यमूल्यों एवं शाला प्रबंधन की प्रकृति का अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पडता है।
3. कार्यमूल्य, शाला प्रबंधन की प्रकृति एवं कला एवं विज्ञान विषयों का अध्यापकों के विद्यार्थियों की शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अंतर होता है।

उपसंहार :–
वर्तमान शोध का अध्ययन में शिक्षाविदों के लिये बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि विद्यालयीन शिक्षा मे अध्यापक का स्थान सर्वोपरि है क्योंकि विद्यार्थियों की शिक्षा की गुणवत्ता का कार्यभार इन्हीं के कंधों पर है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि अध्यापकों के कार्यमूल्य उच्च कोटि के बनाये रखने के लिये प्रशासन को इनके उन्मुखीकरण के विशेष कार्यक्रम, नयी योजनाओं का क्रियान्वयन करना चाहिये । इसी प्रकार विद्यालयों में भी इन पर अतिरिक्त कार्यभार कम होंना चाहिये ताकि इनकी ऊर्जा व स्फूर्ति का लाभ विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में लिया जा सके ।

संदर्भ :

1. भटनागर सुरेश (2010) शिक्षा मनोविज्ञान, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, पृ. 308.
2. कपिल, एच.के. (2005), सांख्यिकी के मूल तत्व : सामाजिक विज्ञानों में, चतुर्थ संस्करण, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, पृ. 232–250.
3. **जोलीदी एफ. एवं यशोधरा (2008)** में भारत और ईरान के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के कार्य मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन Ejournal/vol19207/10 http://www.aiaer.net
4. **कुमार** अजय (2012) ने हरियाणा की दयानन्द विश्वविद्यालय के शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की चिन्तनशैली, कार्यमूल्य, एवं शिक्षण प्रभावशीलता का उनकी व्यवसायिक प्रतिबद्धता से संबंध का अध्ययन shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/7923
5. **लूसिला डी. विपिनोसा** (2015)कैपीज राज्य विश्वविद्यालय में विज्ञान के शिक्षकों की उत्पादकता,कार्यमूल्यों और शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन International Journal of Multidisciplinary Research and Development Volume: 2, Issue: 5, 423-427 May 2015
6. **ढिल्लों और नवदीप** (2010) ने शिक्षकों के मूल्यो के प्रतिमानों एवं शिक्षकों की प्रभावशीलता के संबंधों का अध्ययन shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/10346/11/11 chepter 2 page no. 48